एक जनपद एक उत्पाद

उत्तर प्रदेश

सशक्त उत्तर प्रदेश

odop

एक जनपद एक उत्पाद

उत्तर प्रदेश

सशक्त

उत्तर प्रदेश

सत्यमेव जयते

राष्ट्रपति
भारत गणतंत्र
PRESIDENT
REPUBLIC OF INDIA

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 'उत्तर प्रदेश दिवस' के अवसर पर एक पुस्तिका 'एक जनपद एक उत्पाद' का प्रकाशन किया जा रहा है।

लोकतंत्र में सभी नागरिकों के सामाजिक, आर्थिक विकास तथा हर क्षण जनहित और लोक कल्याणकारी कार्यों के लिए प्रयासरत रहना ही सरकार का परम कर्त्तव्य और धर्म होता है। मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि प्रदेश के सर्वांगीण एवं संतुलित आर्थिक विकास हेतु उत्तर प्रदेश सरकार ने 'एक जनपद एक उत्पाद' योजना के क्रियान्वयन का निश्चय किया है।

मुझे आशा है कि इस योजना के ज़रिए प्रदेश सरकार समग्र विकास के लिए आवश्यक कदम उठाएगी और 'सबका साथ सबका विकास' के हमारे ध्येय के प्रति प्रयासरत रहेगी।

मैं 'उत्तर प्रदेश दिवस' के अवसर पर प्रकाशित इस पुस्तिका के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं देता हूं।

रामनाथ कोविन्द

(राम नाथ कोविन्द)

नई दिल्ली
24 जनवरी, 2018

सत्यमेव जयते

भारत के उपराष्ट्रपति

VICE-PRESIDENT OF INDIA

संदेश

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्राथमिकता के आधार पर ऐसी नीतियों का निर्माण एवं क्रियान्वयन किया जा रहा है, जिनके माध्यम से औद्योगिक विकास एवं पूंजी निवेश के लिए प्रोत्साहनात्मक परिवेश का सृजन किया जा सके। हाल ही में प्रदेश सरकार द्वारा घोषित अवस्थापना तथा औद्योगिक विकास नीति एवं सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम नीति-2017 ने राज्य के उद्यमियों, निर्यातकों एवं हस्तशिल्पियों में एक नवीन विश्वास का संचार किया है।

पारम्परिक शिल्प, शिल्पकार, बुनकर एवं हस्तशिल्पी राज्य के आर्थिक विकास को गति प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अभिनव सोच एवं संतुलित औद्योगिक विकास की प्रतिबद्धता के फलस्वरूप उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा "एक जनपद एक उत्पाद" योजना क्रियान्वित करने का निर्णय लिया गया है। यह योजना राज्य में समावेशी विकास का एक नया मार्ग प्रशस्त करेगी। मुझे पूर्ण विश्वास है कि उत्पादन को पर्यटन के साथ जोड़ते हुए स्थानीय शिल्प कलाओं के विकास, रोजगार के अवसरों में वृद्धि करते हुए इस योजना के माध्यम से प्रदेश के आर्थिक विकास को नवीन उंचाईयों तक ले जाया जा सकेगा।

"एक जनपद एक उत्पाद" की इस गतिशील अवधारणा को अपनाने एवं सफलतापूर्वक क्रियान्वित करने के लिए मैं उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथजी को अपना पूर्ण सहयोग एवं शुभकामनाएँ और शुभाशंसाएँ प्रेषित करता हूँ।

(एम. वेंकैया नायडु)

नई दिल्ली
19 जनवरी, 2018

प्रधान मंत्री
Prime Minister

संदेश

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 24 जनवरी 2018 को 'एक जनपद एक उत्पाद' योजना के शुभारम्भ के बारे में जानकर प्रसन्नता हुई है। इस पहल से पं. दीन दयाल उपाध्याय द्वारा समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक लाभ पहुंचाने के विचार को बल मिलेगा।

गांधी जी ग्रामीण विकास के लिए जिन बुनियादी चीजों को आवश्यक समझते थे उनमें ग्राम स्वराज, ग्रामोद्योग और समग्र ग्राम विकास प्रमुख हैं। गांधी जी कहते थे कि 'भारत गांवों में बसता है'। भारत के विकास के लिए गांवों का विकास करना आवश्यक है। विकास की यात्रा में गांवों को साथ लेकर चलने और किसानों की आय को दोगुनी करने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है।

उत्तर प्रदेश के समृद्ध कारीगरों ने अपनी उत्कृष्ट कला से देश में एक अलग पहचान बनाई है। हर जनपद को किसी विशेष उत्पाद के लिए जाना जाता है। मुझे आशा है कि श्री योगी आदित्यनाथ जी की 'एक जनपद एक उत्पाद' की अवधारणा से पिछड़े वर्गों, महिलाओं और युवाओं को विशेष लाभ पहुंचेगा। हर जनपद विकास की एक नई कहानी लिखेगा और असंतुलित क्षेत्रीय विकास दूर करने में मदद मिलेगी।

इस महत्वपूर्ण और दूरगामी परिणाम देने वाली पहल के लिए मैं उत्तर प्रदेश सरकार को बधाई देता हूं। 'एक जनपद एक उत्पाद' योजना की सफलता के लिए शुभकामनाएं।

(नरेन्द्र मोदी)

नई दिल्ली
19 जनवरी, 2018

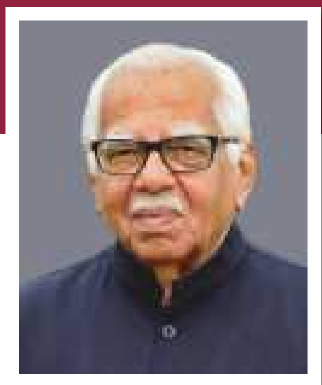

राम नाईक
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

राज भवन
लखनऊ – 226 027

17 जनवरी, 2018

सन्देश

उत्तर प्रदेश प्राकृतिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विविधता से सम्पन्न है और प्रदेश में विद्यमान प्राकृतिक संसाधनों के माध्यम से विकास की प्रचुर सम्भावनाएं हैं। प्रदेश सरकार द्वारा नई सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम नीति, अवस्थापना एवं औद्योगिक विकास नीति 2017 प्रख्यापित की गई है। इसी कड़ी में प्रदेश के समन्वित आर्थिक विकास के लिये एक नये चिन्तन और प्रतिबद्धता की आवश्यकता का अनुभव करते हुए 'एक जनपद एक उत्पाद योजना' का क्रियान्वयन किये जाने का निर्णय लिया गया है।

इस योजना का क्रियान्वयन स्थानीय कौशल विकास एवं रोजगार में वृद्धि, पर्यटन से जुड़ाव, उत्पादों का मूल्यवर्द्धन, औद्योगिक इकाइयों को आधुनिक तकनीकी, प्रतिस्पर्धी मूल्यों पर उत्पादन हेतु अवस्थापना सुविधायें आदि उपलब्ध कराये जाने के माध्यम से प्रदेश के विकास को नई ऊँचाई तक पहुँचाने में सहायक सिद्ध होगा। योजना के क्रियान्वयन से न केवल प्राचीन कला–कौशल का संरक्षण होगा, बल्कि आधुनिकता के साथ प्राचीन उपलब्धियों के समन्वय से उत्पादों का मूल्यवर्द्धन तथा नई पहचान के साथ नये बाजार भी उपलब्ध होंगे। इससे युवाओं के सपनों को नई उड़ान तथा उद्यमिता, स्थानीय विकास तथा ग्रामीण क्षेत्रों में मूलभूत सुविधाओं के विकास को नई गति प्राप्त होगी तथा ग्रामीण क्षेत्रों से हो रहे पलायन को स्वावलम्बन में परिवर्तित करने में भी सहायता मिलेगी।

मैं 'एक जनपद एक उत्पाद योजना' के सफल क्रियान्वयन हेतु अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

(राम नाईक)

संख्या- ओ- /सीएम-1/2018

योगी आदित्यनाथ

मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

दिनांक : 17 जनवरी 2018

सन्देश

उत्तर प्रदेश प्राकृतिक एवं मानव संसाधन से परिपूर्ण राज्य है। भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विविधता के साथ ही, परम्परागत हस्तशिल्प तथा कला कौशल के क्षेत्र में भी उत्तर प्रदेश की अपनी विशिष्ट पहचान है।

विभिन्न शिल्प कलाओं एवं उद्योगों से जुड़े हुए शिल्पियों एवं कारीगरों की आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने तथा प्रदेश के संतुलित एवं समावेशी आर्थिक विकास के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 'एक जनपद एक उत्पाद' योजना को क्रियान्वित करने का निर्णय लिया गया है।

इस योजना के माध्यम से विभिन्न जनपदों के हस्तशिल्पों, कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों तथा अन्य विनिर्मित उत्पादों को विशिष्टता के आधार पर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पहचान दिलायी जाएगी। इस योजना से प्रदेश का प्रत्येक जनपद आच्छादित किया जायेगा। जनपद स्तर पर चिन्हित उत्पादों का सर्वेक्षण करते हुए विश्लेषित निष्कर्षों के आधार पर इनके कुशलतापूर्वक उत्पादन एवं विपणन विकास हेतु रणनीतियां तैयार की जाएंगी।

'एक जनपद एक उत्पाद' योजना के क्रियान्वयन की नियमित समीक्षा जनपद स्तर पर जिलाधिकारी द्वारा तथा राज्य मुख्यालय स्तर पर अवस्थापना एवं औद्योगिक विकास आयुक्त द्वारा की जायेगी। इस योजना में स्थानीय संसाधनों का अधिकतम उपयोग करते हुए प्रत्येक जनपद के उत्पादों को व्यवसायिक रूप से लाभप्रद बनाया जाएगा।

मुझे विश्वास है कि 'एक जनपद एक उत्पाद' योजना स्वरोजगार के माध्यम से युवाओं के सम्मान और समृद्धि में वृद्धि करते हुए प्रदेश के कला–कौशल के संरक्षण तथा संवर्धन में भी सहायक सिद्ध होगी।

योजना के सफल क्रियान्वयन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(योगी आदित्यनाथ)

सत्यदेव पचौरी
मंत्री
खादी एवं ग्रामोद्योग, रेशम उद्योग
वस्त्रोद्योग, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम
उद्यम एवं निर्यात प्रोत्साहन विभाग

(का) : 0522-2213308, 2238067
81-82, मुख्य भवन,
विधान भवन, लखनऊ
9, कालीदास मार्ग, लखनऊ
मो0 : 9455073843
E-mail : sdpachauri1@gmail.com

दिनांक : 16.1.2018

सन्देश

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम क्षेत्र को प्रदेश के सामाजिक एवं आर्थिक विकास, रोजगार सृजन तथा निर्यात के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भागीदारी के कारण इसे विकास के इंजन के रूप में जाना जाता है। प्रदेश में जहाँ एक ओर प्रचुर मात्रा में उपलब्ध प्राकृतिक एवं मानवीय संसाधन है, विविधतापूर्ण संस्कृति है, हस्तशिल्पों की समृद्धि विरासत है, ज्ञान है, कौशल है तो वहीं दूसरी ओर ऊर्जा से परिपूर्ण अपार युवा जनशक्ति की नवाचारी प्रतिभा है।

भारत के मंत्रद्रष्टा ऋषियों ने सदियों पहले उद्घोष किया था कि "नास्ति उद्यम समोबन्धु" अर्थात् उद्यमता से बढ़कर कोई मित्र नहीं है। अतः उद्यमता पर हमारे पूर्वजों की प्रेरणा एवं प्रदेश में प्रचुरता से उपलब्ध प्राकृतिक एवं मानवीय पूंजी तथा विरासत में प्राप्त कौशल के अनुकूलतम समन्वय के द्वारा प्रदेश के सर्वांगीण, निरंतर एवं सन्तुलित विकास के संकल्पित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु प्रदेश सरकार द्वारा उत्तर प्रदेश दिवस के अवसर पर **"एक जनपद एक उत्पाद"** योजना का शुभारम्भ किया जा रहा है।

इस योजना को प्रदेश के प्रत्येक जनपद में लागू किया जाएगा। जहां कहीं आवश्यक होगा, अन्तर्राष्ट्रीय मानक एवं मांग के अनुरूप उत्पादन एवं विपणन से सम्बन्धित सुविधाओं का विकास किया जाएगा। इस योजना के परिणामोन्मुखी क्रियान्वयन हेतु विभिन्न स्तरों पर अनुश्रवण, समीक्षा एवं मूल्यांकन हेतु समस्त आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई हैं ताकि योजना का लाभ हितग्राही समूह को समयबद्ध, सुगम एवं पारदर्शी रूप से प्राप्त हो सके।

मैं माननीय मुख्यमंत्री जी की प्रगतिशील सोच एवं दृढ़ संकल्प के प्रति आभार प्रकट करता हूं जिनकी अभिप्रेरणा एवं कुशल नेतृत्व में उत्तर प्रदेश 24 जनवरी, 2018 को पहली बार अपना स्थापना दिवस मना रहा है तथा तत्क्रम में लघु उद्योग विभाग द्वारा प्रदेश के आर्थिक एवं सामाजिक परिदृश्य में क्रांतिकारी बदलाव लाने वाली "एक जनपद एक उत्पाद" योजना को मूर्तरूप दिए जाने का संकल्प लिया गया है।

(सत्यदेव पचौरी)

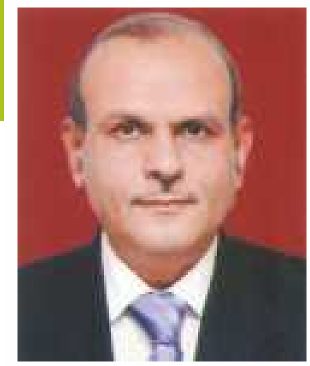

राजीव कुमार
आई.ए.एस.

लाल बहादुर शास्त्री भवन
लखनऊ – 226001
ई–मेल csup@nic.in
फोन : (0522) 2238212, 2236296 (का०)
(0522) 2239461, 2237299 (आ०)
(0522) 2239283 (फैक्स)

संदेश

उत्तर प्रदेश हस्तशिल्प एवं सूक्ष्म तथा लघु उद्योगों के क्षेत्र में भारत के अग्रणी राज्यों में एक है। वैसे तो पूरा प्रदेश विविधतापूर्ण उत्पादन के लिए जाना जाता है, परन्तु प्रदेश के प्रत्येक जनपद में किसी न किसी ऐसी वस्तु का उत्पादन किया जाता है, जिसकी अपनी एक अलग, विशिष्ट पहचान है।

यह हर्ष का विषय है कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा विशिष्ट पहचान रखने वाले इन उत्पादों के उत्पादन एवं विपणन विकास हेतु उ0प्र0 दिवस के अवसर पर सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग द्वारा "एक जनपद एक उत्पाद" योजना की शुरूआत की जा रही है।

यह योजना राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर **"एक जनपद एक उत्पाद"** के रूप में ब्रांडिग के उद्देश्य के साथ-साथ रोजगार सृजन, उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतिस्पर्धी सामर्थ्य के विकास, उत्पादन तकनीकी में सुधार, कारीगरों एवं हस्तशिल्पियों के कौशल विकास के माध्यम से प्रदेश के युवाओं को अधिकाधिक रोजगार प्रदान करते हुए उसमें कार्यरत उद्यमियों, हस्तशिल्पियों एवं कारीगरों की आय को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करेगी।

इस योजना के सफल क्रियान्वयन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(राजीव कुमार)

अनूप चन्द्र पाण्डेय
आई०ए०एस०
अवस्थापना एवं औद्योगिक विकास आयुक्त

अ०शा०प० सं० :...................
दूरभाष :0522-2238283
उत्तर प्रदेश शासन
१४, लाल बहादुर शास्त्री भवन, लखनऊ

दिनांक : 17-01-2018

संदेश

भारत के हृदय स्थल में स्थित उत्तर प्रदेश का राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान है। देश की अर्थव्यवस्था में 8.4 प्रतिशत की भागीदारी के साथ उत्तर प्रदेश भारत की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। भारत के सर्वाधिक सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम उत्तर प्रदेश में हैं। राज्य में स्थानीय स्तर पर कई विशेष व्यवसाय समूह हैं जैसे मेरठ में खेलकूद के सामान, मुरादाबाद में पीतल के सामान, कन्नौज में इत्र, कानपुर में चमड़े, आगरा में जूते, वाराणसी में कशीदाकारी वाली साड़ियां, भदोही में कालीन, लखनऊ में चिकन का काम आदि। यह उत्पाद विश्व प्रसिद्ध हैं एवं इनके निर्यात से राज्य की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त हो रहा है। यद्यपि प्रदेश के प्रत्येक जनपद में कोई न कोई ऐसा उत्पाद अवश्य है जिसकी अपनी एक विशिष्ट पहचान है, लेकिन अभी तक इन वस्तुओं का व्यवसायिक उत्पादन राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में नगण्य है।

इन ख्यातिलब्ध वस्तुओं के सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों तथा हस्तशिल्पी इकाईयों के माध्यम से व्यवसायिक उत्पादन करने एवं प्रदेश के समावेशी आर्थिक विकास एवं रोजगार के नए अवसरों के सृजन हेतु प्रदेश सरकार द्वारा उ0प्र0 दिवस के अवसर पर 'एक जनपद एक उत्पाद' योजना प्रारम्भ की जा रही है। इस योजना के माध्यम से प्रदेश में सूक्ष्म एवं लघु उद्योगों तथा हस्तशिल्पों के विकास हेतु एक नए युग का सूत्रपात होगा तथा प्रदेश के लगभग प्रत्येक जनपद से किसी न किसी उत्पाद को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की ख्याति प्राप्त होगी।

योजना के सफलतापूर्वक क्रियान्वयन हेतु प्रदेश वासियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाऐं।

(अनूप चन्द्र पाण्डेय)

प्राक्कथन

प्रदेश की अर्थव्यवस्था में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों का महत्वपूर्ण योगदान है। यह क्षेत्र पूंजी निवेश, उत्पादन और रोजगार की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम इकाईयों की संख्या की दृष्टि से उत्तर प्रदेश का देश में प्रथम स्थान है तथा रोजगार प्रदान करने में इस क्षेत्र का कृषि क्षेत्र के बाद दूसरा स्थान है। इस क्षेत्र का प्रदेश में होने वाले निर्यात में भी महत्वपूर्ण योगदान है। हस्तशिल्प, प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद, इंजीनियरिंग गुड्स, कारपेट, रेडीमेड गारमेन्ट्स तथा चर्म उत्पादों के निर्यात में उत्तर प्रदेश निरंतर अग्रणी रहा है। देश के कुल हस्तशिल्प निर्यात में उत्तर प्रदेश का योगदान 44 प्रतिशत है। इसी प्रकार कालीन में 39 प्रतिशत एवं चर्म तथा चर्म उत्पाद में 26 प्रतिशत है। देश के समस्त निर्यात में उत्तर प्रदेश की हिस्सेदारी 4.73 प्रतिशत है।

प्रदेश में लगभग प्रत्येक जनपद में हस्तशिल्प, लघु उद्यम अथवा कृषि में ऐसे एकाधिक विशिष्ट उत्पाद हैं, जिनकी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान है। इनमें से कई उत्पाद ऐसे हैं जिनका व्यवसायिक उत्पादन किया जा रहा है तथा इनके निर्यात से विदेशी मुद्रा के माध्यम से राष्ट्रीय एवं राज्य की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त हो रहा है लेकिन कई जनपदों में ऐसे विशिष्ट उत्पाद विद्यमान हैं जिनका, उचित प्रोत्साहनों के अभाव में, अभी तक क्षमता भर व्यवसायिक लाभ नहीं मिल पा रहा है। पीलीभीत की बांसुरी एवं बांदा के शजर पत्थर इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इन उत्पादों की विपणन प्रोत्साहन से पहचान बढ़ाने की, उसमें अधिक रोजगार प्रदान करने की एवं उसमें कार्यरत शिल्पियों एवं कारीगरों की आय बढ़ाने की सम्भावनायें विद्यमान हैं।

अधिकाधिक रोजगार सृजन, आय में वृद्धि तथा समेकित रूप से प्रदेश के चहुंमुखी आर्थिक विकास हेतु उत्तर प्रदेश दिवस पर दिनांक 24 जनवरी, 2018 को प्रदेश में ''एक जनपद एक उत्पाद'' योजना प्रारम्भ की जा रही है।

मुझे विश्वास है कि ''एक जनपद एक उत्पाद'' योजना स्थानीय कौशल को संरक्षण प्रदान करते हुए कौशल विकास उत्पाद की गुणवत्ता सुधार तथा उत्पादन को पर्यटन से जोड़ते हुए ''एक जनपद एक उत्पाद'' की अवधारणा को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक ब्राण्ड के रूप में प्रतिस्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करेगी।

''एक जनपद एक उत्पाद'' की नवोन्मेषी एवं अद्वितीय विकास अवधारणा माननीय मुख्य मंत्रीजी की दूर दृष्टि से उत्पन्न है। मुझे पूर्णतया विश्वास है कि यह योजना वैश्विक चिन्तन एवं स्थानीय क्रियान्वयन के माध्यम से प्रदेश के सर्वांगीण विकास एवं सभी वर्ग के जीवन स्तर उन्नयन में अत्यन्त सहायक सिद्ध होगी। मैं विश्वास दिलाता हूं कि हम इस योजना के लाभों को समग्रता में विकास की पंक्ति में अन्तिम छोर तक खड़े व्यक्ति तक पहुंचाना सुनिश्चित करेंगे एवं उनके चेहरों पर मुस्कान लायेंगे। मैं माननीय मुख्य मंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी की इस योजना के क्रियान्वयन हेतु उनके विशाल हृदयता, समर्थन एवं मार्गदर्शन के प्रति भावपूर्ण आभार प्रकट करता हूं।

मैं श्री सत्यदेव पचौरी, माननीय मंत्री, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम तथा निर्यात प्रोत्साहन को उनके सतत मार्गदर्शन एवं समर्थन, श्री राजीव कुमार, मुख्य सचिव को उनके प्रोत्साहन एवं सहयोग तथा श्री अनूप चन्द्र पाण्डेय, अवस्थापना एवं औद्योगिक विकास आयुक्त को उनके रचनात्मक सुझाव हेतु धन्यवाद ज्ञापित करता हूं।

अंत में श्री रणवीर प्रसाद, आयुक्त एवं निदेशक उद्योग व उनके समस्त सहयोगियों विशेषकर समस्त संयुक्त आयुक्त उद्योग तथा जनपदों के उपायुक्त उद्योग, श्री पवन कुमार, विशेष सचिव को उनके महत्वपूर्ण सुझावों हेतु, श्री आर. के. सिंह, अपर आयुक्त, निर्यात प्रोत्साहन ब्यूरो व उनके सहयोगियों को उनके संगठित प्रयासों, समन्वयन एवं समग्रता में योजना को प्रस्तुत करने, यूपीको के श्री प्रवीन सिंह एवं उनके सहयोगियों को एवं मेरे व्यक्तिगत स्टाफ श्री सुभाष चन्द्र एवं श्री उपदेश कुमार को इस योजना हेतु किये गये विशेष प्रयासों हेतु धन्यवाद देता हूं।

(अनिल कुमार)
प्रमुख सचिव
सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम तथा निर्यात प्रोत्साहन विभाग

उत्तर प्रदेश में 'एक जनपद – एक उत्पाद' की अवधारणा

उत्तर प्रदेश 2,40,928 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। प्रदेश का क्षेत्रफल देश के भौगोलिक क्षेत्र का 7.3 प्रतिशत है तथा क्षेत्रफल के दृष्टिकोण से उत्तर प्रदेश देश में चौथा सबसे बड़ा राज्य है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार राज्य की आबादी 19.98 करोड़ है, जो भारत की आबादी का लगभग 16.5 प्रतिशत है तथा भारत के सभी राज्यों में सबसे अधिक है। वर्ष 2015-16 में रु. 11,45,234 करोड़ के जी.एस.डी.पी. के साथ उत्तर प्रदेश भारत की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, जिसका अंश देश की अर्थव्यवस्था में 8.4 प्रतिशत है।

प्रदेश की अर्थव्यवस्था में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों का महत्वपूर्ण योगदान है। यह क्षेत्र पूंजी निवेश, उत्पादन और रोजगार की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्र है। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम इकाईयों की संख्या की दृष्टि से (लगभग 46 लाख; 8%) उत्तर प्रदेश का देश में प्रथम स्थान है, तथा रोजगार प्रदान करने में इस क्षेत्र का कृषि क्षेत्र के बाद दूसरा स्थान है। इस क्षेत्र का प्रदेश से होने वाले निर्यात में भी महत्वपूर्ण योगदान है। हस्तशिल्प, प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद, इंजीनियरिंग गुड्स, कारपेट, रेडीमेड गारमेंट्स तथा चर्म उत्पादों के निर्यात में उत्तर प्रदेश निरंतर अग्रणी रहा है। देश के कुल हस्त शिल्प निर्यात में उत्तर प्रदेश का योगदान 44% है। इसी प्रकार कालीन में 39% एवं चर्म तथा चर्म उत्पाद में 26% है। देश के समस्त निर्यात में उत्तर प्रदेश की हिस्सेदारी 4.73% है।

प्रदेश में लगभग प्रत्येक जनपद में हस्तशिल्प, लघु उद्यम अथवा कृषि में ऐसे एकाधिक विशिष्ट उत्पाद हैं, जिनकी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान है। उदाहरणार्थ: बनारस की सिल्क साड़ियाँ, मुरादाबाद के पीतल के हस्तशिल्प उत्पाद, पीलीभीत की बांसुरी, बांदा के शजर पत्थर की कलाकृतियाँ, सिद्धार्थनगर का काला नमक चावल, ऐसे ही उत्पाद हैं, जिनको परिचय की आवश्यकता नहीं है। ऐसे उत्पादों की विपणन प्रोत्साहन से पहचान बढ़ाने के लिए, उसमें अधिक रोजगार प्रदान करने की, उसमें कार्यरत शिल्पियों अथवा कामगारों की आय बढ़ाने की अपार संभावनाएं हैं।

इसे दृष्टिगत रखते हुए प्रदेश में '**एक जनपद एक उत्पाद**' की अवधारणा पर योजना को क्रियान्वित करने का निश्चय किया गया है। इस योजना के मुख्य उद्देश्य निम्नवत् हैं :

- स्थानीय कौशल का संरक्षण व विकास एवं संबंधित कला का संवर्धन
- आय व स्थानीय रोजगार में अतिरिक्त वृद्धि (फलतः रोजगार हेतु पलायन में कमी)
- उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार एवं कौशल विकास
- उत्पाद की कलात्मकता को नया कलेवर प्रदान करना (पैकेजिंग व ब्रांडिंग)
- उत्पादन का पर्यटन से जुड़ाव (लाइव डेमो व सेल आउटलेट-गिफ्ट व सोविनियर)
- आर्थिक असमानता एवं क्षेत्रीय असंतुलन का निदान
- ओ.डी.ओ.पी.ब्राण्ड की अवधारणा को प्रान्तीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाना

किसी जनपद में एक से अधिक विशिष्ट पहचान वाले उत्पादों की स्थिति में प्रथम चरण में अधिक रोजगार एवं विकास की संभावना वाले उत्पाद का चयन किया गया है। शनैः शनैः अन्य उत्पादों को भी योजना में लेकर क्रियान्वयन किया जाना प्रस्तावित है।

योजना के क्रियान्वयन में प्रत्येक जनपद के उत्पाद के लिए निम्न मुख्य कार्य किये जायेंगे :

- उत्पाद से संबंधित आंकड़े, प्रसार, जुड़े व्यक्ति, कुल उत्पादन निर्यात, कच्चे माल की उपलब्धता, प्रशिक्षण की व्यवस्था।
- उत्पाद के निर्माण, विपणन तथा प्रसार एवं विकास की संभावनाओं का आंकलन।
- उत्पाद के विकास, विपणन के प्रोत्साहन तथा इससे जुड़े कारीगरों/शिल्पियों को रोजगार के अतिरिक्त अवसर एवं आय में वृद्धि के लिए माइक्रो प्लान तैयार किया जाना।
- उत्पाद के विपणन हेतु प्रोत्साहन, विज्ञापन एवं प्रचार-प्रसार, जनपद, प्रदेश, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विपणन के अवसरों की उपलब्धता।
- नई एवं कार्यरत इकाईयों के लिए वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता एवं वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराए जाने हेतु भारत सरकार की मुद्रा, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (PMEGP), स्टैंड अप योजना तथा प्रदेश सरकार की मुख्यमंत्री युवा स्व-रोजगार योजना विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना से समन्वय; आवश्यकतानुसार अन्य योजनाओं को प्रारम्भ करना।
- सहकारिता एवं स्वयं सहायता समूहों का गठन।
- क्राफ्ट व्यवसाय का सामान्य और तकनीकी प्रशिक्षण एवं तकनीकी विकास।

इस पुस्तिका में प्रत्येक जनपद के चयनित उत्पाद के प्रदर्शन का प्रयास किया गया है, जिससे जनसामान्य तक प्रदेश की अनुपम कला एवं विरासत पहुंच सके। साथ ही अधिक से अधिक व्यक्ति इस कला के संरक्षण एवं संवर्द्धन से जुड़कर क्षेत्रीय वैयक्तिक विकास के क्षेत्र में अपना योगदान कर सकें।

एक जनपद एक उत्पाद
उत्तर प्रदेश

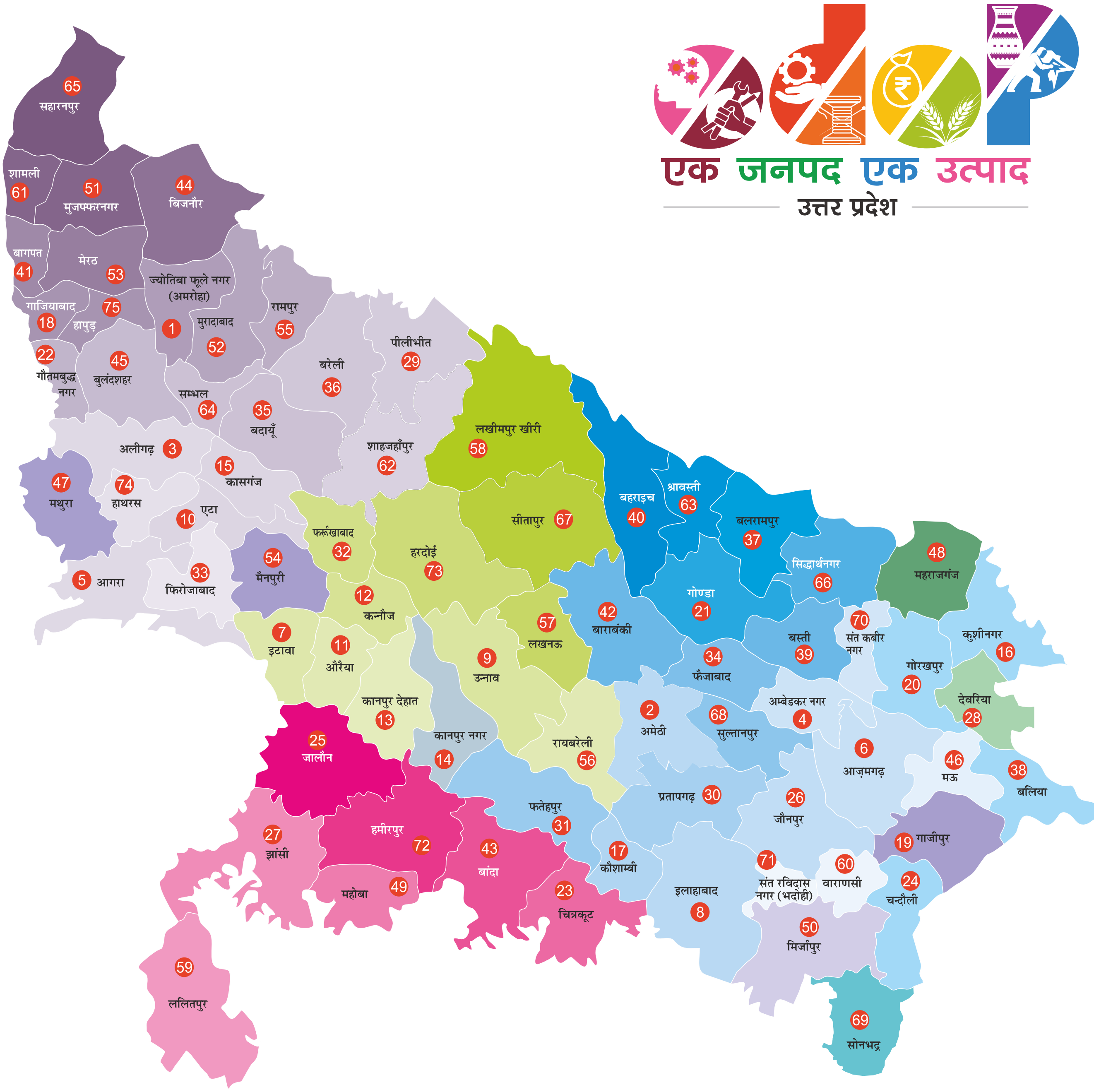

क्र.सं.	जनपद	चिन्हित उत्पाद
1.	अमरोहा	वाद्य यंत्र (ढोलक)
2.	अमेठी	मूँज उत्पाद
3.	अलीगढ़	ताले एवं हार्डवेयर
4.	अम्बेडकर नगर	वस्त्र उत्पाद
5.	आगरा	चमड़े के उत्पाद
6.	आज़मगढ़	काली मिट्टी की कलाकृतियाँ
7.	इटावा	वस्त्र
8.	इलाहाबाद	मूँज उत्पाद
9.	उन्नाव	ज़री-ज़रदोज़ी
10.	एटा	घुंघरू, घंटी
11.	औरैया	दूध प्रसंस्करण (देशी घी)
12.	कन्नौज	इत्र

क्र.सं.	जनपद	चिन्हित उत्पाद
13.	कानपुर देहात	जस्ते के बर्तन
14.	कानपुर नगर	चमड़े के उत्पाद
15.	कासगंज	ज़री-ज़रदोज़ी
16.	कुशीनगर	केले के रेशे से बने उत्पाद
17.	कौशाम्बी	खाद्य प्रसंस्करण (केला)
18.	गाज़ियाबाद	यांत्रिकी उत्पाद
19.	गाजीपुर	जूट वॉल हैंगिंग्स
20.	गोरखपुर	मिट्‌टी के बर्तन (टेराकोटा)
21.	गोण्डा	खाद्य प्रसंस्करण (दाल)
22.	गौतमबुद्धनगर	सिले-सिलाए वस्त्र
23.	चित्रकूट	लकड़ी के खिलौने
24.	चन्दौली	ज़री-ज़रदोज़ी
25.	जालौन	हस्त निर्मित कागज
26.	जौनपुर	ऊनी दरी
27.	झांसी	कोमल खिलौने (सॉफ्ट ट्वॉयज)
28.	देवरिया	सजावटी उत्पाद
29.	पीलीभीत	बांसुरी
30.	प्रतापगढ़	खाद्य प्रसंस्करण (आँवला)
31.	फतेहपुर	बेडशीट
32.	फ़र्रूख़ाबाद	ब्लॉक प्रिंटिंग
33.	फिरोज़ाबाद	कांच उत्पाद
34.	फ़ैज़ाबाद	गुड़
35.	बदायूँ	ज़री-ज़रदोज़ी
36.	बरेली	ज़री-ज़रदोज़ी
37.	बलरामपुर	खाद्य प्रसंस्करण (दाल)
38.	बलिया	बिन्दी
39.	बस्ती	काष्ठ शिल्प (वुड क्राफ्ट)
40.	बहराइच	गेहूँ के डंठल की कलाकृतियाँ
41.	बागपत	घरेलू सजावटी सामान
42.	बाराबंकी	हथकरघा उत्पाद
43.	बांदा	शज़र पत्थर शिल्प
44.	बिजनौर	काष्ठ शिल्प (वुड क्राफ्ट)
45.	बुलन्दशहर	चीनी मिट्‌टी के बर्तन (पॉटरी)
46.	मऊ	वस्त्र उत्पाद
47.	मथुरा	स्वच्छता सम्बन्धी उपकरण
48.	महराजगंज	फर्नीचर
49.	महोबा	गौरा पत्थर शिल्प
50.	मिर्ज़ापुर	कालीन
51.	मुज़फ्फरनगर	गुड़
52.	मुरादाबाद	धातु शिल्प
53.	मेरठ	खेल का सामान
54.	मैनपुरी	तारकशी कला
55.	रामपुर	पैचवर्क
56.	रायबरेली	काष्ठ शिल्प (वुड क्राफ्ट)
57.	लखनऊ	चिकनकरी एवं ज़री ज़रदोजी
58.	लखीमपुर खीरी	जनजातीय शिल्प (ट्राइबल क्राफ्ट)
59.	ललितपुर	ज़री सिल्क साड़ी
60.	वाराणसी	रेशम उत्पाद
61.	शामली	रिम एवं धुरा (एक्सेल)
62.	शाहजहाँपुर	ज़री-ज़रदोज़ी
63.	श्रावस्ती	जनजातीय शिल्प (ट्राइबल क्राफ्ट)
64.	सम्भल	सींग एवं अस्थि उत्पाद
65.	सहारनपुर	काष्ठ शिल्प (वुड कार्विंग)
66.	सिद्धार्थनगर	खाद्य प्रसंस्करण (काला नमक चावल)
67.	सीतापुर	दरी
68	सुल्तानपुर	मूँज उत्पाद
69.	सोनभद्र	कालीन
70.	संत कबीर नगर	पीतल के बर्तन
71.	संत रविदास नगर (भदोही)	कालीन
72.	हमीरपुर	जूती
73.	हरदोई	हथकरघा
74.	हाथरस	हींग प्रसंस्करण
75.	हापुड़	घरेलू सजावटी सामान

अमरोहा

वाद्य यन्त्र (ढोलक)

दस्तकारी के क्षेत्र में जनपद में काष्ठ आधारित ढोलक वाद्य यन्त्र की लगभग 300 छोटी-छोटी इकाईयाँ कार्यरत हैं, जिनमें 1000 से अधिक कारीगर हैं। इस जनपद में ढोलक बनाने का कार्य काफी समय से किया जा रहा है। यह हाथ व छड़ी से बजाया जाता है। सामाजिक विकास के चलते ढोलक के प्रयोग का दायरा और विस्तृत हो गया है। ढोलक आम, शीशम, सागौन या नीम की लकड़ी से बनायी जाती है।

अमेठी

मूँज उत्पाद

जनपद अमेठी के तराई क्षेत्रों में प्राकृतिक रूप से बहुवर्षीय घास पाई जाती है जिसे स्थानीय भाषा में सरपत (मूँज) कहते हैं। यहाँ लगभग पच्चीस से तीस हजार स्थानीय लोग मूँज के बने विभिन्न प्रकार के गृह उपयोगी एवं सजावटी सामानों यथा- मुढ्ढा, फुट मैट, कैरी बैग, रस्सी, पेन स्टैण्ड, मौनी, डेलरी, कुर्सी, मेज इत्यादि का निर्माण बिना किसी मशीनी उपकरण का प्रयोग किये, आसानी से कर रहे हैं। यह कुटीर उद्योग पूर्णतया प्रदूषण मुक्त है।

अलीगढ़

ताले एवं हार्डवेयर

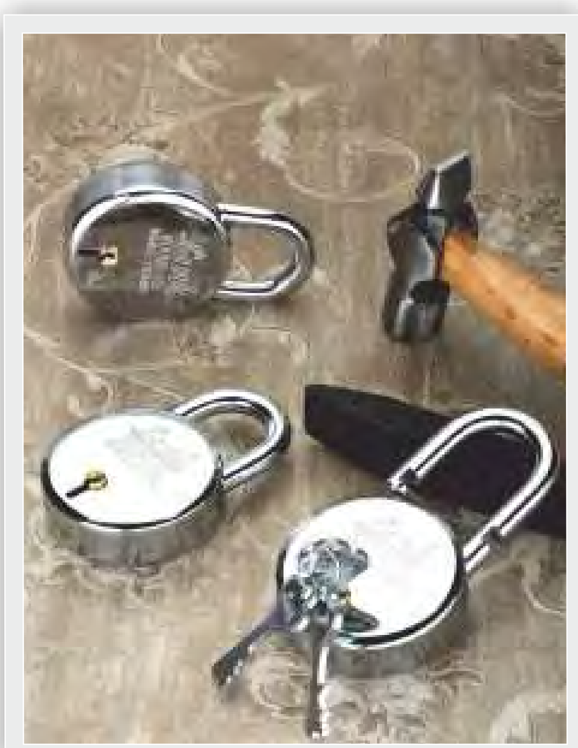

जनपद अलीगढ़ समस्त भारत में ताले के निर्माण हेतु विख्यात रहा है। वर्तमान में अलीगढ़ में पैडलॉक, डोरलॉक, मल्टीस्लोट साइकिल लॉक, मल्टीपरपज लॉक आदि बनाये जा रहे है। ताले एवं हार्डवेयर का कार्य घरों से लेकर सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम इकाईयों में भी हो रहा है।

अम्बेडकर नगर

वस्त्र उत्पाद

अम्बेडकर नगर जनपद में पावरलूम से वस्त्र निर्माण का कार्य मुख्यतः टाण्डा क्षेत्र में किया जाता है। पावरलूम से वस्त्र निर्माण का कार्य 50 वर्ष ही पुराना है, हैण्डलूम से वस्त्र निर्माण का कार्य पीढ़ियों से चला आ रहा है, जिसमें स्थानीय हस्तशिल्प तकनीकी का प्रयोग किया जाता रहा है। अब टाण्डा क्षेत्र का लगभग हर परिवार इस कार्य से जुड़ा हुआ है जिसके अन्तर्गत लगभग 43000 कारीगर रोजगार प्राप्त कर रहे हैं।

आगरा

चमड़े के उत्पाद

आगरा जनपद में चमड़े से निर्मित फुटवियर, बेल्ट एवं पर्स आदि का कार्य होता है। इस कार्य हेतु कच्चा माल मुख्यत: कानपुर, कोलकाता, चेन्नई, ताईवान व चीन आदि से आयात किया जाता है। जनपद में इस उत्पाद की गुणवत्ता वृद्धि की सम्भावनायें हैं। वर्तमान में इनके विकास हेतु डिजाइन लैब तथा टेस्टिंग सुविधाओं को विकसित किये जाने की आवश्यकता है।

आज़मगढ़

काली मिट्टी की कलाकृतियाँ

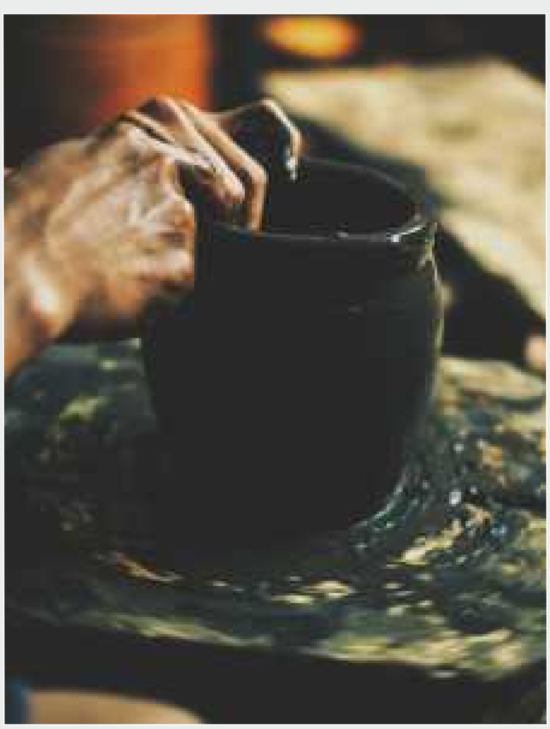

काली मिट्टी की कलाकृतियाँ (ब्लैक पॉटरी) जनपद आज़मगढ़ के निजामाबाद क्षेत्र में एक विशेष प्रकार की मिट्टी से तैयार की जाती है। इस क्षेत्र में लगभग 200 कारीगर कार्यरत हैं, जो विभिन्न प्रकार की ब्लैक पॉटरी जैसे-मिट्टी के बर्तन, सुराही, फूलदान आदि बनाते हैं। इस क्राफ्ट की देश एवं विदेशों में अत्यधिक माँग है।

इटावा

वस्त्र

जनपद इटावा में वस्त्र उत्पाद का कार्य काफी मात्रा में किया जाता है। वस्त्रों पर विभिन्न पैटर्न वाले हाथ औजारों द्वारा छपाई का कार्य किया जाता है। कारीगरों द्वारा डिजाइनर कपड़ों में सिंगल बेडशीट, डबल बेडशीट, विभिन्न प्रकार के कुशन कवर, पिलो कवर तथा गमछा (अंगौछा) आदि प्रमुख रूप से तैयार किया जाता है। यहां के छपे हुये डिजाइनर कपड़ों की मांग अधिक होने के कारण इस कला के विस्तार की व्यापक सम्भावनायें हैं।

इलाहाबाद

मूँज उत्पाद

इलाहाबाद के नैनी क्षेत्र में मूँज से सम्बन्धित शिल्प का कार्य होता है। कच्चा माल स्थानीय स्तर पर आसानी से उपलब्ध हो जाने के कारण अब मूँज से निर्मित विविध वस्तुएं बाजार में उपलब्ध हैं, यथा-टोकरी, डलिया, पेपरवेट, कोस्टर स्टैण्ड, बैग, सजावटी सामान इत्यादि। मूँज निर्मित उत्पाद ईको-फ्रेन्डली होने के कारण आधुनिक परिवेश में बहुत सी डिजाइनों व रंगों का प्रयोग करके भारत के अन्य प्रान्तों में तथा अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में निर्यात होने की क्षमता रखते हैं।

उन्नाव

ज़री-ज़रदोज़ी

ज़री-ज़रदोज़ी कढ़ाई हस्तशिल्प की एक अत्यन्त समृद्ध परम्परा है। मलूरूप से सोने के तारों से की जाने वाली ज़रदोज़ी कढ़ाई भारतीय जीवन शैली में समृद्धि को अभिव्यक्त करती है। उक्त उत्पाद के चहुंमुखी विकास के लिये कच्चे माल की उपलब्धता तथा डिजाइन एवं प्राडेक्ट डेवलपमेंट में प्रशिक्षण एवं विपणन की आवश्यकता है।

एटा

घुंघुरू, घंटी

एटा जनपद में कस्बा जलेसर एक ऐतहासिक स्थल है, जहां मगध नरेश जरासंध की राजधानी थी। यहां मुख्य रूप से पीतल के घुंघुरू, घन्टी बनाने का कार्य किया जा रहा है। घुंघुरू एवं घन्टी बनाने में कच्चे माल के रूप में मिट्टी, शीरा, सफेद पाउडर व पीतल धातु का प्रयोग किया जाता है।

औरैया

दुग्ध प्रसंस्करण (देशी घी)

जनपद औरैया पशुपालन में अग्रणी स्थान रखता है और शुद्ध देशी घी के उत्पादनकर्ता के रूप में प्रसिद्ध है। जनपद औरैया से देशी घी की आपूर्ति देश के विभिन्न प्रान्तों पंजाब, पश्चिम बंगाल, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु तथा मुम्बई आदि में की जाती है।

कन्नौज

इत्र

कन्नौज 'इत्र नगरी' के नाम से प्रसिद्ध है। जिले में 'सुरस' एवं सुगन्ध विकास केन्द्र (एफएफडीसी) 1991 से कार्यरत् है। यह संस्था यूनिडो, केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार के सहयोग से स्थापित की गयी है। इस संस्था में इत्र से सम्बन्धित सभी आयामों (सुगन्धित पौधों की खेती, प्रसंस्करण, बायाटेक्नोलॉजी, प्रशिक्षण कन्सल्टेन्ट तथा अन्य सम्बन्धित कार्य) को किया जाता है। वर्तमान में बड़ी संख्या में इत्र उत्पादक इकाइयां कार्यरत हैं जिनमें हजारों लोगों को रोजगार मिला हुआ है।

कानपुर देहात

जस्ते के बर्तन

जनपद कानपुर देहात का पुखरायां क्षेत्र बर्तनों के उत्पादन के लिए जाना जाता है। पुखरायां में एल्युमिनियम के भगौना, टंकी, चम्मच, केतली, स्टील बाल्टी, थाली, ग्लास, चम्मच तथा प्रेशर कुकर निर्माण की इकाईयां कार्यरत हैं। यहाँ के उत्पादों को कालपी, उरई, झांसी, हमीरपुर, बांदा तथा कानपुर औरैया, इटावा आदि शहरों में विक्रय हेतु भेजा जाता है।

कानपुर नगर

चमड़े के उत्पाद

कानपुर नगर, भारत में चमड़ा उद्योग का सबसे बड़ा केन्द्र रहा है। यहाँ लेदर से निर्मित फुटवियर, बेल्ट, पर्स, चप्पल, चमड़े के वस्त्र एवं घोड़े की जीन का कार्य होता है। देश से कुल चमड़े एवं चमड़े के सामान के निर्यात में अकेले कानपुर नगर की भागीदारी लगभग 20 प्रतिशत से अधिक है। यहाँ बनने वाले लेदर उत्पाद अमेरिका और यूरोपीय देशों को निर्यात किये जाते हैं।

कासगंज

ज़री-ज़रदोज़ी

जनपद कासगंज में ज़री-ज़रदोज़ी मुगलकाल से ही प्रचलित है। यहाँ कशीदाकारी, हाथ से कढ़ाई, मूंगा मोती, रेशम आदि सम्बन्धित कार्य पहले से होता रहा है। हाथ से की गयी कशीदाकारी मूंगा मोती के कार्य का अपना एक अलग स्थान है। जनपद कासगंज में लगभग 65 हजार कारीगर वर्तमान में ज़री-ज़रदोज़ी के कार्य में लगे हुए हैं। कासगंज के उत्पादों की मांग राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर है।

कुशीनगर

केले के रेशे से बने उत्पाद

जनपद कुशीनगर में केले के रेशों से बने 'बनाना फाइबर' का प्रयोग मजबूत धागा एवं बैग निर्माण के कार्य में किया जाता है तथा अवशेष बचे केले के तने का उपयोग जैविक खाद निर्माण में किया जाता है। एक तरफ जहाँ यह प्रोजेक्ट पर्यावरण के अनुकूल अर्थात 'इको फ्रेन्डली' है, वहीं दूसरी तरफ यह किसानों द्वारा निष्प्रयोज्य घोषित कर फेंके गये केले के तने का सदुपयोग भी करता है। जनपद कुशीनगर में जहाँ केले की खेती बहुतायत में हो रही है, वहाँ इस प्रकार के उद्योगों के विकास की अच्छी सम्भावना है।

कौशाम्बी

खाद्य प्रसंस्करण (केला)

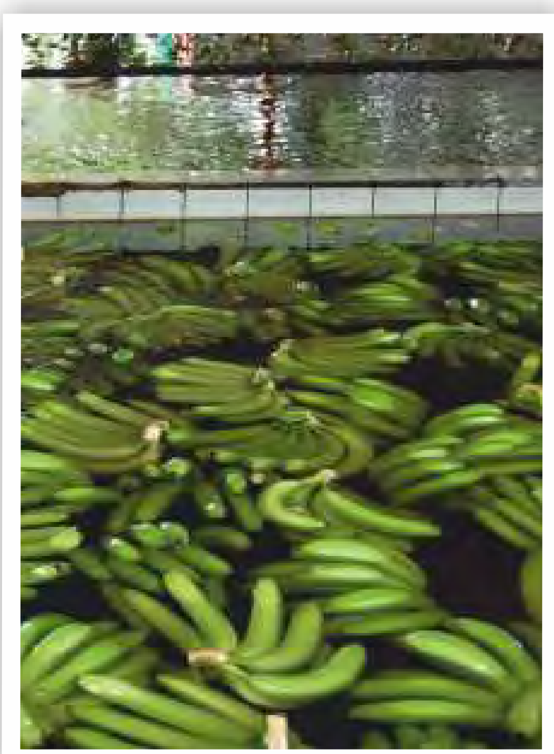

जनपद कौशाम्बी एक कृषि प्रधान जिला है। जनपद में केले की खेती बहुतायत में हो रही है। इस जनपद में फूड प्रोसेसिंग इकाइयों द्वारा विभिन्न किस्म के उत्पाद यथा-केले के चिप्स, सौन्दर्य प्रसाधन इत्यादि उत्पाद तैयार किये जाते हैं। वर्तमान में बड़ी संख्या में इकाइयाँ इस क्षेत्र में कार्यरत् हैं। इन इकाइयों में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार प्राप्त हो रहा है।

गाज़ियाबाद

यांत्रिकी - उत्पाद

जनपद गाज़ियाबाद में इंजीनियरिंग उद्योगों की बहुलता है। ऑटोमोबाईल स्पयेर पार्ट्स, शुगर मिल, मशीनरी पार्ट्स, लिफ्ट, फोर्जिंग की इकाईयाँ जनपद में हैं। इस जनपद से मशीनरी पार्ट्स एवं मशीन का निर्माण तथा निर्यात किया जाता है। जनपद की विभिन्न फोर्जिंग इकाईयों द्वारा रोल्स, गियर्स, शाफ्ट्स, स्टील्स ट्यूब्स इत्यादि का निर्माण किया जाता है।

गाजीपुर

जूट वाल हैंगिंग्स

जनपद गाजीपुर में जूट वाल हैंगिंग का कार्य परम्परागत रूप में वर्षों से होता आ रहा है। गाजीपुर के हस्तशिल्पियों द्वारा निर्मित उत्पाद का निर्यात भी किया जा रहा है। उक्त उत्पाद के चहुंमुखी विकास के लिये कच्चे माल की उपलब्धता एवं प्रॉडक्ट डेवलपमेंट में प्रशिक्षण एवं विपणन की आवश्यकता है।

गोरखपुर

मिट्टी के बर्तन (टेराकोटा)

टेराकोटा एक विशेष प्रकार की मृत्तिका शिल्प है। इस शिल्प का शैल अलकंरण, प्राकृतिक रंग एवं अभिनव आकृतियों के साथ प्रयोग जैसी विशेषतायें इस कला को दूसरी टेराकोटा कलाओं से अलग करती है। इसके निर्माण में स्थानीय मिट्टी को कच्चे माल के रूप में प्रयोग करते हैं एवं इसमें प्राकृतिक रंग डालने के लिए एक अन्य कत्थई रंग की मिट्टी मिलाई जाती है। इस उत्पाद में लगभग 200 परिवार रोजगारत हैं।

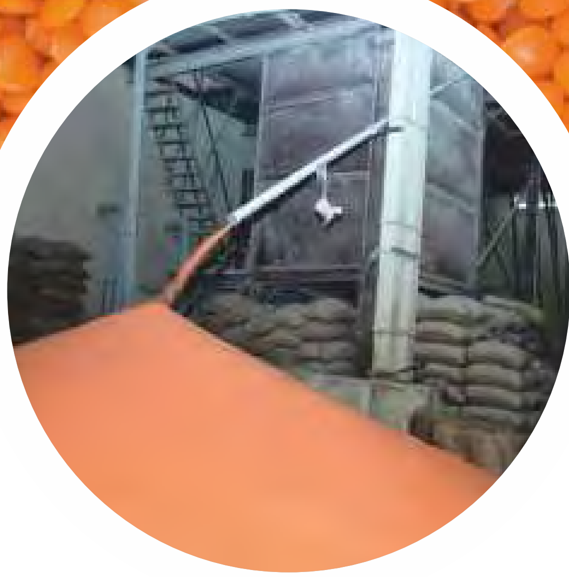

गोण्डा

खाद्य प्रसंस्करण (दाल)

गोण्डा जनपद तराई क्षेत्र है। इस जनपद में किसानों द्वारा दाल, गन्ना, मक्का, धान आदि की फसलें उगाई जाती हैं। जिसमें दाल नकदी फसल के रूप में जानी जाती है। दाल से विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ का उत्पादन परम्परागत तरीके से किया जाता है।

गौतमबुद्धनगर

सिले-सिलाये वस्त्र

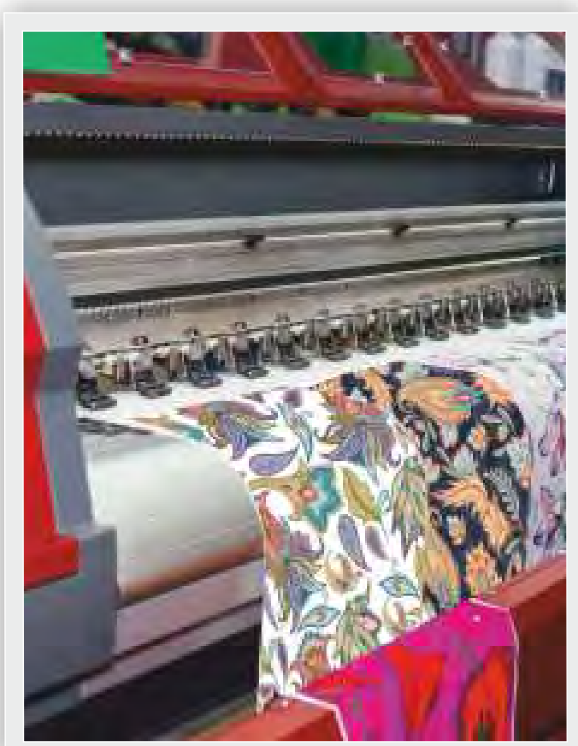

गौतमबुद्धनगर को 'सिटी आफ अपैरल' के नाम से भी जाना जाता है। इस क्षेत्र में लाखों व्यक्ति इस व्यवसाय से जुड़े हुए हैं, जिनमें लगभग 60 प्रतिशत महिलाएं हैं। गौतमबुद्धनगर में लगभग 2500 रेडीमेड गारमेन्ट की इकाईयाँ स्थापित हैं। इकाईयों द्वारा तैयार माल का 70 प्रतिशत विदेशों में निर्यात किया जाता है। इकाईयों में कुशल कारीगर उपलब्ध कराने हेतु यहाँ एक अपैरल ट्रेनिंग सेन्टर की स्थापना की गई है।

चित्रकूट

लकड़ी के खिलौने

जनपद चित्रकूट में वन क्षेत्र होने के कारण लकड़ी की पर्याप्त उपलब्धता है। यहां पर पर्याप्त मात्रा में हस्तशिल्पी लकड़ी के खिलौने बनाने का कार्य करते हैं। यहां के तैयार किये गये खिलौने प्रदेश के विभिन्न जनपदों में बिक्री हेतु एवं विभिन्न मेले एवं प्रदर्शनियों में भेजे जाते हैं।

चन्दौली

ज़री-ज़रदोज़ी

साड़ियों पर ज़री का अधिकांश कार्य जनपद चन्दौली के गोपालापुर, दलुहीपुर, सतपाखेरी, सिकन्दरपुर, कटेसर आदि क्षेत्रों के हस्तशिल्पियों द्वारा किया जाता है। यहाँ पर ज़री की कला वाराणसी से आयी है। वर्तमान समय में जनपद चन्दौली में ज़री का कार्य जॉब वर्क के रूप में किया जाता है। यहां के हस्तशिल्पी वाराणसी की इकाईयों के लिये कार्य करते हैं।

जालौन

हस्त निर्मित कागज

जनपद जालौन में जमुना नदी के किनारे स्थित कालपीनगर में लगभग 25 वर्षों से कपड़े की कतरन एवं रद्दी कागज से हैण्ड मेड पेपर बनाने का कार्य होता है, जिसका उपयोग ऑफिस फाइल, कैरीबैग, सोख्ता पेपर, विभिन्न प्रकार के विजिटिंग कार्ड आदि बनाने में किया जाता है। आधुनिक तकनीकों का उपयोग करते हुए उत्पाद की गुणवत्ता बढ़ाई जा सकती है।

जौनपुर

ऊनी दरी

जनपद जौनपुर में मडियाहूं तहसील क्षेत्र में ऊनी दरी का कार्य पारंपरिक ढंग से सदियों से होता रहा है। वर्तमान में यहां के शिल्पियों द्वारा तैयार किये गये उत्पादों का निर्यात भी किया जा रहा है। वर्तमान में सैकड़ों परिवारों को इस उद्योग से रोजगार मिला हुआ है। विभिन्न इकाईयों द्वारा दरी का उत्पाद तथा निर्यात किया जाता है।

झाँसी

कोमल खिलौने (सॉफ्ट ट्वायज)

वर्तमान में झाँसी जनपद में सॉफ्ट ट्वायज की इकाइयाँ स्थापित हैं, जिसमें सैकड़ों लोगों को रोजगार मिला है। इसमें पॉली क्लॉथ, नाइलैक्स क्लॉथ, फाइबर (रूई) आदि का कच्चे माल के रूप में प्रयोग किया जाता है। दिल्ली जैसे बड़े शहरों में प्रमुख रूप से इसकी आपूर्ति की जाती है।

देवरिया

सजावटी - उत्पाद

जनपद में घरों की सजावट एवं उपयोगी सामग्री हेतु जैसे-झूमर, झालर, पर्दा, कास्मेटिक चादरों की कढ़ाई एवं बुनाई उत्पाद का कार्य किया जाता है। इनके उत्पाद स्थानीय बाजार के साथ-साथ जनपद से समीपवर्ती अन्य जनपदों तथा बिहार व अन्य प्रदेशों में ब्रिकी हेतु भेजे जाते हैं।

पीलीभीत

बांसुरी

जनपद पीलीभीत की बांसुरी देश ही नहीं विदेशों में भी प्रसिद्ध है। कच्चा माल असम से पीलीभीत आता है और बांसुरी बनाने के लिए उपयोग में लिया जाता है। पीलीभीत बांसुरी उत्पादन हेतु देश का अकेला जनपद है।

प्रतापगढ़

खाद्य प्रसंस्करण (आँवला)

प्रतापगढ़ जनपद की एक प्रमुख पहचान यहां के 'आँवला' से भी है। इस जनपद में आँवला के अतिरिक्त अमरूद और आम का उत्पादन भी प्रचुर मात्रा में होता है। इस जनपद में फूड प्रोसेसिंग इकाइयों द्वारा विभिन्न किस्म के उत्पाद यथा, मुरब्बा, अचार, जेम, जेली, लड्डू, बर्फी, कैण्डी, जूस, पाउडर, सुपारी, च्वयनप्राश, आँवला चूर्ण इत्यादि उत्पाद तैयार किये जाते हैं।

फतेहपुर

बेड शीट

जनपद में टेक्सटाइल उद्योग से सम्बन्धित कई इकाइयाँ कार्यरत् हैं, जिनमें धागों से निर्मित तौलिया, जींस के कपड़े के अतिरिक्त चादर का निर्माण मुख्य रूप से किया जाता है। यहां के उत्पादों की भारतीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में एक विशेष पहचान है। यहां के डिजाइनर कपड़ों/चादरों की मांग अधिक होने के कारण इसके विस्तार की व्यापक सम्भावनायें हैं ।

फ़र्रुख़ाबाद

ब्लॉक प्रिंटिंग

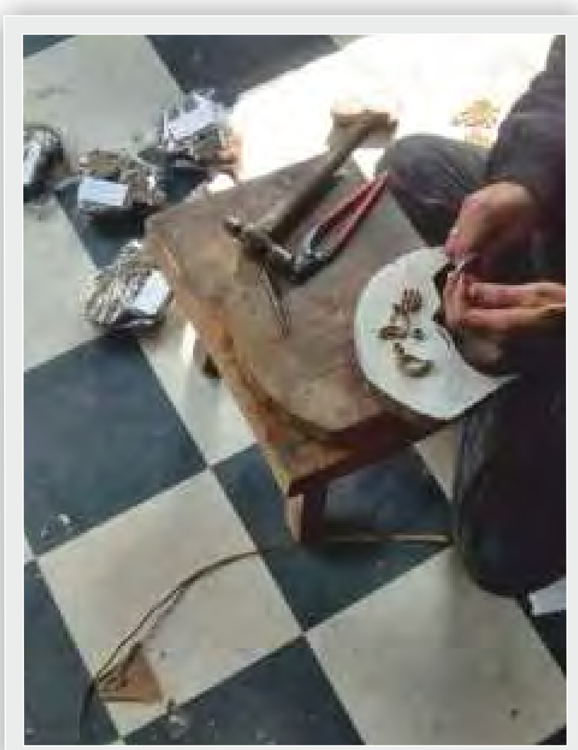

जनपद फ़र्रुख़ाबाद में प्रिंटिंग के ब्लाक बनाकर रजाई के कवरों, साड़ी, सूट, दुपट्टा, स्टोल एवं शॉल पर लकड़ी व पीतल के प्रिंटिंग ब्लाकों द्वारा ब्लाक प्रिंटिंग की जाती है। यहां के ब्लाक प्रिंटिंग से बने सामानों की मांग पूरे भारत वर्ष के साथ-साथ अमेरिका, ब्राजील, एशिया तथा यूरोपीय देशों में भी होती है।

फिरोज़ाबाद

काँच - उत्पाद

जनपद फिरोज़ाबाद में बहुतायत में कांच की वस्तुओं का निर्माण जनपद के हस्तशिल्पियों द्वारा किया जाता है। यहाँ माउथ ब्लोइंग प्रक्रिया द्वारा काँच के उत्पाद मुख्यतया हैण्डीक्राफ्ट, लालटेन, क्रिसमस ट्री, किचन वेयर तथा डेकोरेटिव उत्पाद इत्यादि तैयार किये जाते है। माउथ ब्लोइंग प्रक्रिया इस जनपद के कारीगरों का परम्परागत तरीका है। जनपद में लगभग 20,000 हस्तशिल्पियों द्वारा ग्लास से निर्मित वस्तुओं का निर्माण किया जाता है।

फ़ैज़ाबाद

गुड़

जनपद में गुड़ निर्माण कार्य परम्परागत रूप से पीढ़ियों से चला आ रहा है। जनपद की कुल कृषि योग्य भूमि के 20 प्रतिशत भाग पर गन्ने की खेती की जाती है। प्रमुख उत्पाद में गुड़ व गुड़ से निर्मित अन्य उत्पाद जैसे-शक्कर, गुड़ व तिल का गजक, लड्डू, चिक्की, गुड़ काजू का लड्डू आदि प्रमुख है। जनपद में कच्चा माल (गन्ना) पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है।

बदायूँ

ज़री-ज़रदोज़ी

बदायूँ अपने ज़री एवं ज़रदोज़ी उत्पादों के लिये विख्यात है। लगभग 35 प्रतिशत परिवार ज़री ज़रदोजी उद्योग में लगे हुये हैं। ज़री ज़रदोज़ी उद्योग कुटीर उद्योग है। रेशम, करदाना मोती, कोरा कसब, मछली तार, नक्क़ाशी, नग, मोती, टीकी, ट्यूब, चांदला, जरकन नूरी, दबका डोरी के गुल्ले एवं गोल्डन चैन इत्यादि द्वारा यह कार्य किया जाता है। स्थानीय तौर पर इस कार्य को कारचोबी के नाम से भी जाना जाता है।

बरेली

ज़री-ज़रदोज़ी

ज़री वस्त्र सोने, चाँदी तथा रेशम अथवा तीनों प्रकार के तारों के मिश्रण से बनता है। वर्तमान में जनपद में ज़री-ज़रदोज़ी के शिल्प से जुड़ी सूक्ष्म एवं लघु इकाईयाँ कार्य कर रही हैं। प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य से लगभग दो लाख हस्तशिल्पी जुड़े हुए हैं। इस शिल्प के अन्तर्गत ड्रेस मटेरियल, जैकेट, सूट, साड़ी, लहंगा, देवी देवताओं के परिधान, दुपट्टे, हैण्डबैग इत्यादि तैयार कराये जाते हैं।

बलरामपुर

खाद्य प्रसंस्करण (दाल)

जनपद बलरामपुर में तराई क्षेत्र होने के कारण किसानों द्वारा नकदी फसल के रूप में छोटी मसूर दाल प्रचुर मात्रा में उगाई जाती है। यहां पर छोटी दाल मिलें स्थापित हैं। यहां की मसूर दाल की गुणवत्ता उत्तम होने के कारण इसकी बिक्री प्रदेश के साथ-साथ अन्य प्रदेशों में भी होती है।

बलिया

बिन्दी

जनपद बलिया में विकास खण्ड मनियर में बिन्दी (टिकुली) उद्योग संचालित है। जिला बलिया में अनके बिन्दी कुटीर उद्योग विगत कई वर्षों से संचालित हैं। इनका व्यापार मुम्बई, कोलकाता, दिल्ली, गोरखपुर, कानपुर, वाराणसी इत्यादि महानगरों सहित स्थानीय स्तर पर किया जाता है।

बस्ती

काष्ठ शिल्प (वुड क्राफ्ट)

जनपद बस्ती में काष्ठ शिल्प (वुड क्राफ्ट) का कार्य बहुतायत में होता है, जिसमें सोफा सेट, बेड, श्रृंगारदानी और इमारतों में प्रयोग होने वाले हर तरह के सामानों का निर्माण होता है। वुड क्राफ्ट के लिये कच्चे माल की उपलब्धता स्थानीय स्तर पर ही हो जाती है।

बहराइच

गेहूँ के डंठल की कला कृतियाँ

जनपद बहराइच में हस्तशिल्प निर्माण कला-क्षेत्र में गेहूँ के डण्ठल से बनी कलाकृतियाँ एक पहचान बना चुकी हैं। इस कला कृति की विशेषता यह है कि गेहूँ के डण्ठल से कपड़े के फ्रेम पर चित्र आकृतियाँ तैयार की जाती हैं। यह कला कृतियाँ ज्यों-ज्यों पुरानी होती जाती है, उनमें सुनहरे रंग की चमक बढ़ती जाती है। अभी तक जनपद के तीन हस्तशिल्पी इस शिल्प में राज्य पुरस्कार से सम्मानित हो चुके हैं।

बागपत

घरेलू सजावटी सामान

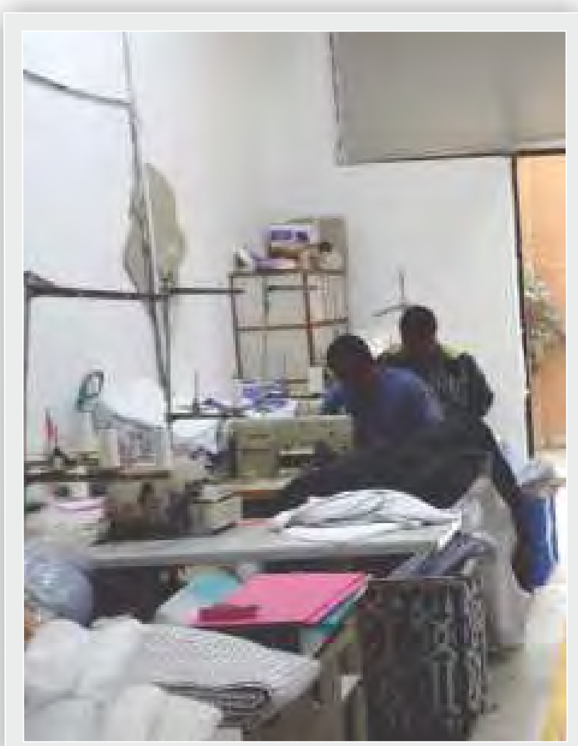

जनपद बागपत के खेकड़ा क्षेत्र में विगत अनेक वर्षों से हैण्डलूम व्यापार स्थापित है। हैण्डलूम की इकाईयाँ वर्तमान में पावरलूम में परिवर्तित हो चुकी है। यहाँ के हैण्डलूम/पावरलूम द्वारा निर्मित पर्दे, किचन टॉवल, प्लेसमेन्ट, टेबल कवर, कुशन्स, होम फर्निशिंग उत्पाद आदि प्रसिद्ध हैं।

बाराबंकी

हथकरघा उत्पाद

जनपद बाराबंकी में हथकरघे से कपड़ा बुनाई का कार्य किया जा रहा है। कॉटन कपड़ों की मांग अधिक होने के कारण परम्परागत तकनीकी से तैयार हथकरघा उत्पादों की अत्यधिक मांग है। घरेलू उद्योग होने के कारण शहरी एवं ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में बुनाई का कार्य किया जाता है। जनपद बाराबंकी में वर्तमान में लगभग 11,200 बुनकर हथकरघे पर कपड़ा बुनाई का कार्य कर रहे हैं।

बांदा

शज़र पत्थर शिल्प

शज़र पत्थर बुन्दलेखण्ड क्षेत्र में स्थित बांदा नगर के पश्चिम भाग में बहने वाली 'केन' नदी से प्राप्त होता है। शज़र पत्थर को खोजने से लेकर इसके तराशने का कार्य कठिन साध्य है। इस पत्थर में प्राकृतिक रूप से मिलने वाले फल पत्तियों की छवि इसे अत्यन्त आकर्षक बनाती है। इसके प्रयोग से उत्कृष्ट स्तर की कलाकृतियाँ बनाई जाती हैं।

बिजनौर

काष्ठ शिल्प (वुड क्राफ्ट)

जनपद बिजनौर का कस्बा नगीना दुनिया में 'गहना' शब्द से मशहूर है। यह कस्बा वुड कार्विंग के लिये पूरे विश्व में वुड क्राफ्ट सिटी के नाम से मशहूर है। नगीना के हस्तशिल्पियों द्वारा आज भी पारम्परिक लकड़ी उत्पाद बनाये जाते हैं तथा उन पर नक्क़ाशी कार्य किया जाता है। पीतल की छोटी-छोटी मूर्तियाँ, फूल पत्तियाँ आदि जड़कर नक्क़ाशी की जाती है।

बुलन्दशहर

चीनी मिट्टी के बर्तन (पॉटरी)

जनपद बुलन्दशहर के खुर्जा में फ़िरोज़शाह तुगलक़ के समय से परम्परागत पॉटरी का कार्य किया जाता रहा है। सिरेमिक पॉट्स पर ब्लू आर्टकला यहाँ की पॉटरी की विशेषता है। जनपद में पॉटरी उद्योग की लगभग 350 इकाईयाँ कार्यरत हैं, जिनमें लगभग 20,000 व्यक्ति प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से कार्यरत हैं।

मऊ

वस्त्र-उत्पाद

जनपद मऊ में वर्तमान समय में घर-घर में करघे लगे हुए हैं, जिसमें साड़ी, लुंगी, सूट आदि कपड़ों का उत्पादन हो रहा है। इसके अतिरिक्त यहाँ उत्पादित साड़ियों पर स्थानीय हस्तशिल्पियों द्वारा जरी यार्न से अत्यन्त सुन्दर कलाकृतियां उकेरी जा रही हैं, में मऊ की साड़ियों की प्रदेश एवं अन्य प्रदेशों में अत्यधिक मांग हैं। साड़ी बुनाई के अतिरिक्त जरी वर्क एवं कशीदाकारी का कार्य भी किया जा रहा है।

मथुरा

स्वच्छता सम्बन्धी उपकरण
(सैनिटरी-फिटिंग्स)

जनपद मथुरा में बाथरुम फिटिंग्स यथा, टैप्स एण्ड कॉक्स का उत्पादन किया जा रहा है। ये उद्योग कोर मेकिंग विधि तथा सैण्ड डाई कास्टिंग विधि के द्वारा अत्यंत सुन्दर बाथरुम फिटिंग्स का निर्माण करते हैं।

महराजगंज

फर्नीचर

जनपद महराजगंज में काफी बड़े भू-भाग पर वन क्षेत्र हैं, जिनका उपयोग कच्चे माल के रूप में कुशल कारीगरों द्वारा बेड, चेयर, डोर, डाइनिंग टेबुल, सोफा, ड्रेसिंग टेबुल इत्यादि को बनाने में किया जाता है। उत्कृष्ट कोटि के फर्नीचर को तैयार कर इन्हें स्थानीय तथा अन्य शहरों में बिक्री हेतु भेजा जाता है।

महोबा

गौरा पत्थर शिल्प

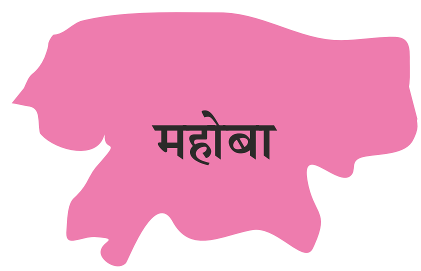

जनपद महोबा का गौरा पत्थर शिल्प उत्तरोत्तर विकास करते हुए एक प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त कर चुका है। गौरा पत्थर प्रकृति से मुलायम है और इसके टुकड़ों को विभाजित कर अनेक प्रकार के कलात्मक सामान तैयार किये जाते हैं। इस कार्य में विभिन्न परिवारों के हस्तशिल्पी कार्यरत हैं।

मिर्ज़ापुर

कालीन

जनपद मिर्ज़ापुर का कालीन तथा दरी उद्योग देश में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। हाथ से बनी कालीन अपनी कलात्मकता के लिये प्रसिद्ध है। यह प्राकृतिक ऊन से बनायी जाती है, इसकी रंगाई पक्की होती है। बारीक डिजाईन केवल हाथ से बनी कालीन में ही पाया जाता है। मिर्ज़ापुर में कालीन का निर्माण परम्परागत तरीके से किया जाता है।

मुज़फ्फ़रनगर

गुड़

जनपद मुज़फ्फ़रनगर एक कृषि प्रधान जिला है। इस जनपद में गन्ने का उत्पादन अत्यधिक मात्रा में होता है। वर्षों से यहाँ परम्परागत रूप से गुड़ का उत्पादन किया जाता है। यहाँ का गुड़ गुजरात, राजस्थान, हरियाणा आदि राज्यों में भेजा जाता है।

मुरादाबाद

धातु शिल्प-उत्पाद

मुरादाबाद 'पीतल नगरी' के नाम से विख्यात है। मुरादाबाद में ब्रास उत्पादों पर मुगलकालीन भित्तिचित्रों की नक्काशी के साथ-साथ हिन्दू देवी-देवताओं का चित्रण भी कुशलता पूर्वक किया जाता है। हस्तशिल्पी 'सैंड कास्टिंग' तकनीक का प्रयोग करके धातु उत्पादों की ढलाई करते हैं। घरेलू इकाईयों के अतिरिक्त मुरादाबाद में धातु उत्पादों का उत्पादन करने वाली निर्यातोन्मुखी इकाईयाँ भी स्थापित हैं। निर्यातकों ने अन्य धातुओं से जैसे-एल्युमीनियम, स्टनेलेस स्टील, लोहा इत्यादि का प्रयोग करना प्रारम्भ किया है।

मेरठ

खेल का सामान

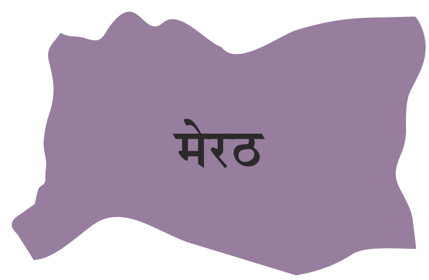

जनपद मेरठ खेल-कूद सामग्री निर्माता के तौर पर जालंधर के बाद भारत में दूसरा स्थान रखता है। जनपद द्वारा उत्पादित खेल सामग्री देश के साथ-साथ विदेशों में भी विख्यात है। खेलकूद के सामान की इकाईयों में घरेलू उद्योग से लेकर मध्यम श्रेणी तक की हैं। इस उत्पाद में अभी निर्यात की अपार सम्भानाएं हैं। इस उद्योग से हजारों लोगों को रोजगार मिला हुआ है।

मैनपुरी

तारकशी कला

मैनपुरी में शीशम की लकड़ी पर पीतल के तार से विशिष्ट कलात्मक कार्य किया जाता है। जिसे 'तारकशी' के नाम से जाना जाता है। इस कला का प्रयोग ज्वैलरी बॉक्स, नाम पट्टिका तथा अन्य सजावटी सामानों पर होता है। डिजाइन व मांग को उपयुक्त बाजारों तक प्रचारित करने की आवश्यकता है।

रामपुर

पैचवर्क

जनपद रामपुर में पैचवर्क का कार्य मुख्य हस्तशिल्प है। रामपुर में प्रमुखतः पैच वर्क, जरी वर्क का कार्य जॉब वर्क पर होता है। यहाँ के कारीगर इस कला में दक्ष हैं।

रायबरेली

काष्ठ शिल्प (वुड क्राफ्ट)

जनपद रायबरेली में वुड से सम्बन्धित कार्य अधिक मात्रा में किया जाता है। वुड के कार्यों में घरेलू सामान जैसे दरवाजे, चौखट, पलंग, बेड व कलात्मक कार्य जैसे वुडेन खिलौने व कलाकृतियाँ शामिल हैं। वुडेन कार्य का कच्चा माल स्थानीय स्तर पर उपलब्ध है। यहाँ के बने उत्पाद को स्थानीय बाजार के अतिरिक्त आस-पास के अन्य शहरों में भी भेजा जाता है।

लखनऊ

चिकनकारी एवं ज़री-ज़रदोज़ी

लखनऊ अपने परम्परागत चिकनकारी एवं ज़री-ज़रदोज़ी शिल्प के लिये विश्व प्रसिद्ध है। चिकनकारी जहाँ सुई व विभिन्न प्रकार के धागों से कपड़ों पर की जाने वाली कढ़ाई है, वहीं ज़री-ज़रदोज़ी कपड़ों पर सुनहरे व रूपहले तारों, सितारों व अन्य सामग्रियों से की जाने वाली कढ़ाई है। चिकनकारी व ज़री-ज़रदोज़ी जी.आई. में पंजीकृत है एवं 'लखनवी इम्ब्राइडरी' के रूप अपनी पहचान बनाए हुए है, जिसमें लाखों कारीगर रोजगार से जुड़े हुए हैं।

लखीमपुर खीरी

जनजातीय शिल्प (ट्राइबल क्राफ्ट)

जनपद लखीमपुर खीरी में थारू जन जाति द्वारा थारू क्राफ्ट का उत्पादन अपने हस्तशिल्प प्रक्रिया के अर्न्तगत अन्य सहायक औजारों के माध्यम से परम्परागत ढंग से किया जाता है। थारू जन जाति द्वारा अपने उत्पादों को अपने निकटस्थ दुधवा नेशनल पार्क, जनपद स्तरीय/राज्य स्तरीय/राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में प्रतिभाग कर विपणन किया जाता है।

ललितपुर

ज़री सिल्क साड़ी

जनपद ललितपुर में ज़री सिल्क साड़ियों के लगभग 400 बुनकर हैं। यहां की साड़ियाँ विश्व प्रसिद्ध हैं, जो अपनी खूबसूरत, उकेरी गयी बूटियाँ एवं डिजाइन के लिये जानी जाती हैं। पूरे भारत के सभी बड़े महानगरों में इन साड़ियों की आपूर्ति नियमित की जाती है।

वाराणसी

रेशम - उत्पाद

वाराणसी की पवित्र नगरी के नाम पर आधारित बनारसी सिल्क साड़ी सदियों से भव्यता और कुलीनता का प्रतीक है। होम फर्निशिंग, सिल्क फेब्रिक तथा अन्य उपयोगी वस्त्र प्रसाधन के लिए वाराणसी का सिल्क निरंतर आकर्षक बना हुआ है।

शामली

रिम एवं धुरा (एक्सेल)

जनपद से निर्मित रिम एवं एक्सेल की मांग देश में ही नहीं, विदेशों में भी हैं। यहाँ से निर्मित रिम एवं एक्सेल का निर्यात भी किया जाता है। रिम एवं एक्सेल बनाने के लिये इन इकाईयों में परम्परागत तकनीक का ही प्रयोग किया जाता है। आधुनिक तकनीक का प्रयोग करने से इस उत्पाद की मांग बढ़ने की सम्भावना है।

शाहजहाँपुर

ज़री ज़रदोज़ी

जनपद शाहजहाँपुर में ज़री ज़रदोज़ी का कार्य प्रमुखता से होता है। जनपद में ड्रेस मैटेरियल, सूट साड़ी, पर्स, बैग, हैण्ड बैग, जूते, चप्पल, टोपी, गाउन आदि पर ज़री ज़रदोज़ी का कार्य होता है।

श्रावस्ती

जन जातीय शिल्प (ट्राइबल क्राफ्ट)

जनपद में हस्तशिल्प के रूप में थारू क्राफ्ट पुराना परम्परागत हस्तशिल्प उद्योग है, जिसके अन्तर्गत कपड़े की चादर, गिलाफ, मेजपोश एवं महिलाओं के सूट के कपड़े पर पैचिंग के द्वारा कढ़ाई की जाती है, जो बेहद सुन्दर एवं आकर्षक होती है।

सम्भल

सींग एवं अस्थि-उत्पाद

सम्भल अपने हार्न-बोन हैण्डीक्राफ्ट उत्पादों के लिये प्रसिद्ध है। यह उद्योग पर्यावरण अनुकूल है क्योंकि इसमें प्रयोग होने वाला कच्चा माल मृत पशुओं से प्राप्त होता है। यहाँ के हस्तशिल्पियों द्वारा सींग एवं हड्डी से विभिन्न कलात्मक एवं सजावटी सामान निर्मित किये जाते हैं।

सहारनपुर

काष्ठ शिल्प (वुड कार्विंग)

जनपद का मुख्य हस्तशिल्प उत्पाद काष्ठ कला (वुड कार्विंग) वर्षों पुराना है। यहाँ का हस्तशिल्प अपने सुन्दर डिजाइनों एवं नक्काशी के लिए प्रसिद्ध है। शीशम और आम की लकड़ी इस उद्योग का मुख्य कच्चा माल है। जनपद सहारनपुर से लकड़ी नक्काशी के फर्नीचर एवं हैण्डीक्राफ्ट उत्पादों का निर्यात विभिन्न देशों को किया जाता है।

सिद्धार्थनगर

खाद्य प्रसंस्करण (काला नमक चावल)

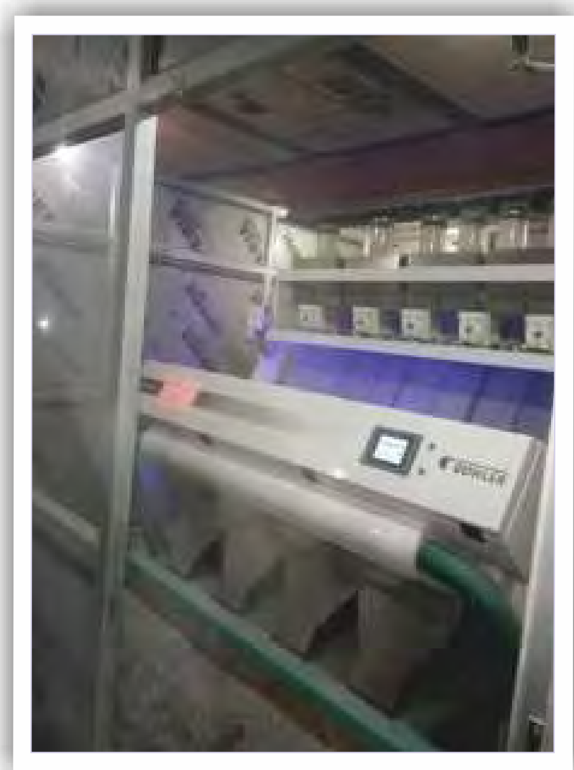

सिद्धार्थनगर का काला नमक चावल खुशबूदार व मुलायम चावल है। उक्त गुणवत्ता के कारण अन्य चावलों की अपेक्षा इसकी अलग पहचान है। जनपद में वर्तमान में हाइब्रिड काला नमक चावल की पैदावार अधिक है।

सीतापुर

दरी

सीतापुर सूती एवं ऊनी दरियों के लिए प्रसिद्ध है। जनपद में नई-नई डिजाइनों की दरियाँ कलात्मक तरीके से बनाई जाती है। जनपद में निर्मित दरियों का निर्यात जापान, फ्रांस, इटली, डेनमार्क, ब्राजील आदि देशों में किया जा रहा है।

सुल्तानपुर

मूंज–उत्पाद

जनपद सुलतानपुर में मूंज के बाध से रस्सी, चारपाई बुनने एवं अन्य समानों के बंडल बनाने में प्रयोग किया जाता है। घरेलू कुटीर उद्योग होने के कारण बिना किसी मशीनी उपकरण का प्रयोग किये आसानी से निर्माण किया जा रहा है। इससे विभिन्न उपयोगी और सजावटी वस्तुएं निर्मित होती हैं।

सोनभद्र

कालीन

जनपद सोनभद्र अपने विशिष्ट उत्कृष्ट डिजाइनों वाले कालीन के लिए प्रसिद्ध है। हाथ से बनी कालीन अपनी कलात्मकता के लिये प्रसिद्ध है। सोनभद्र में कालीन का निर्माण परम्परागत तरीके से किया जाता है। यहां के उत्पादों में बारीक डिजाईन केवल हाथ से बनी कालीन में ही पाई जाती है।

संत कबीर नगर

पीतल के बर्तन

संत कबीर नगर का 'बखीरा' ब्रासवेयर क्राफ्ट जीवित कला का उदाहरण है, जहां उद्यमी एवं हस्तशिल्पी अपने कुशल हाथों से विभिन्न प्रकार के कलात्मक बर्तन और शोपीस का निर्माण करते हैं। लोटा, कटोरा, थाली, गिलास, पतीली, बटुली, जग, कलश, घंटी जैसी अनेकानेक दैनिक उपयोग की वस्तुयें और मूर्तियाँ यहाँ के प्रमुख उत्पाद हैं।

भदोही

कालीन

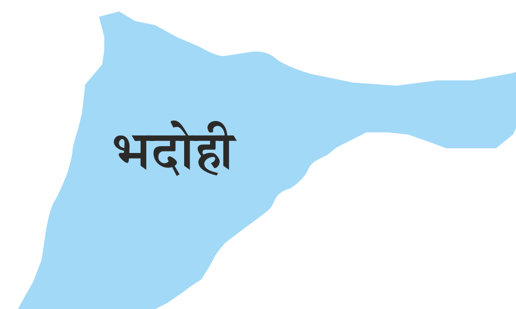

जनपद भदोही अपने विशिष्ट एवं उत्कृष्ट डिजाइनों वाले कालीन के उत्पादन एवं निर्यात के लिये विश्व विख्यात है। जनपद में लगभग एक लाख करघों पर कालीन बुनाई का कार्य होता है तथा 500 से अधिक निर्यातक इकाइयाँ स्थापित हैं।

हमीरपुर

जूती

जनपद हमीरपुर के सुमेरपुर नगर में पुराने समय से चमड़े की जूती का निर्माण किया जा रहा है। यह कार्य पूर्णतः हस्त-निर्मित है। तकनीकी प्रशिक्षण एवं आर्थिक सहायता प्रदान करके इस उद्योग की अलग पहचान स्थापित की जा सकती है ।

हरदोई

हथकरघा

जनपद हरदोई में नगर पालिका क्षेत्र एवं ब्लाक मल्लावॉ क्षेत्र में प्लेन कपड़ों की बुनाई जैसे लुंगी, गमछा, शर्टिंग का उत्पादन बुनकरों द्वारा किया जाता है। मल्लावॉ क्षेत्र के बुनकरों द्वारा लगभग 7 करोड़ मूल्य का प्रति वर्ष उत्पादन किया जाता है। यह क्षेत्र लगभग 5000 बुनकरों को रोजगार प्रदान करता है।

हाथरस

हींग प्रसंस्करण

जनपद हाथरस में हींग का उत्पादन विगत100 वर्षों से बड़े स्तर पर किया जा रहा है। हींग का उत्पादक जनपद होने के कारण इसकी एक विशिष्ट पहचान है। कच्चे हींग का मुख्यत: अफगानिस्तान, तजाकिस्तान, उज्बेकिस्तान आदि देशों से आयात किया जाता है। इन सभी का मिश्रण करके हींग को तैयार किया जाता है। जनपद हाथरस में हींग की विभिन्न इकाईयाँ कार्यरत हैं। इन इकाईयों में अब हींग प्रोसेसिंग की पुरानी मशीनरी हटाकर नई मशीन लगा कर हींग का उत्पादन बढ़ाने की आवश्यकता है।

हापुड़

घरेलू सजावटी सामान

जनपद हापुड़ का पिलखुवा क्षेत्र पावरलूम नगरी के नाम से देश में विख्यात है। यहां घरेलू सजावटी सामान के अन्तर्गत हैण्डलूम/पावरलूम द्वारा निर्मित पर्दे, किचन टॉवल, प्लेसमेन्ट, टेबल कवर, कुशन्स (पिलो) आदि विश्वविख्यात हैं। ब्लॉक प्रिंटिंग, बेडशीट आदि का निर्माण किया जाता है। पावरलूम की लगभग 250 इकाईयाँ कार्यरत हैं, जिनमें लगभग 10,000 व्यक्तियों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्राप्त हो रहा है।

नोट्स

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम तथा निर्यात प्रोत्साहन विभाग, उत्तर प्रदेश

लाल बहादुर शास्त्री भवन, तृतीय तल, लखनऊ-226001

फोन: (0522) 2237409 ई-मेल : **psec.msme.up@gov.in**

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

मुद्रक : प्रिन्टको प्रिन्टर्स, लखनऊ